REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | JULY - 2017

प्रवासी महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी विमर्श

डॉ. मिरगणे अनुराधा जनार्दन

प्रस्तावना :

जीवन एक सादा सा कैनवास ही तो है, एकदम साफ आसमान की तरह, पर जब शाम के वक्त इस आसमान पर तरह-तरह के रंग उतरते है जैसे सुनहरा, लाल, नीला, सफेद तो कितना अच्छा लगता है। मन करता है उसे बस उसे तकते रहो, निहारते रहो। विदेश में बसी महिला कथाकारों की कहानियॉ भी मुझे ऐसी ही लगी। संघर्ष और परिवर्तन का इनसानी दस्तावेज है यह कहानियॉ। मन के नन्हें-नन्हें दुख-सुख, छोटी-छोटी कमजोरियों का लेखा-जोखा। यही कथ्य को प्रभावशाली बनाता है। धर्म का आतंकवादी रुख, परिवार का विघटन, नारी स्वातन्त्रय की ललकं, मन का टूटापन, सभ्य और असभ्य समाज का स्पष्ट चेहरा यह सारे के सारे टूटे कांच के टुकडे से लगे। जिसे जोडने से पूरे समाज, सभ्यता और इन्सान का रुप सामने आ जाता है।

इन कहानियों में भारतीयता का असर, रिश्तों की कोमल भावनाएँ है। प्रेम, निष्ठा की पारदर्शी छवि अपनी पूरी चाहत और तर्को अपने को इमानदार सिध्द करने का इंसानी फरेब अच्छा है। अपने खास अंदाज में चमक अलग झलकती है। अतियाखान की कहानी 'भिखारिन' में एक ऐसी नारी के संघर्ष को दिखाया है। जिसे उसके आदमी ने मारपीठ कर घर से निकाल दिया और दूसरी औरत रख ली। उसके साथ उसकी डेढ वर्ष की बच्ची भी है जिसे लेकर वह दर-दर भटकती है और पेट पालने के लिए भिखारिन की तरह हाथ फैलाकर भीख मांगनी शुरु कर देती है। कई दिनों तक खाना न मिलने के कारण उसकी दशा बडी नाजुक बनी हुई है। भटकते-भटकते वह सरकारी डॉक्टरनी के दरवाजे पर पहुँचती है और दरवाजा खटखटाती है। दरवाजा खुलते ही उसने हाथ फैलाकर भीख मांगनी शुरु की। डॉक्टरनी की बेटी नरगिस ने जो देखा भिखारिन जवान और हाथ पांव से दुरस्त है तो जिस तरह हमेशा वह पेशेवर जवान तंदरुस्त भिखारिनों से कहती थी 'जाओ नौकरी करो भीख क्यों मांगती हो?' उसी तरह उस औरत से कहा। 'तो फिर नौकरी दे दीजिए।' वह झट से बोली। मगर इस जवाब की आशा नरगिस को नहीं थी। वह उसका ख्याल था कि नौकरी का नाम सुनकर आम पेशेवर भिखारिनों की तरह वह श्री आगे बढ जायेगी। मगर यह भिखारिन जिस तहर नौकरी के लिए रजामन्द हो गई थी। इसका जवाब बाहर एक भिखारिन बैठी है वह नौकरी करने को तैयार है, आप नौकर रखेंगी? उसकी अम्मा का वही जवाब जो सामान्य औरत का होता है। 'नरगिस तुम्हारा दिमाग खराब है, इस तरह भिखारिनों को जाने पहचाने वगैर नौकर रखा जाता है? यह कहते हुए वह बाहर आकर देखती है कि एक भूखी औरत अपनी भूखी बच्ची गोद में लिए बैठी थी। उसने पूछा, 'कहां से आई हो' तो जवाब था, 'कई दिनों से कुछ नही खाया है, खाना खिला दीजिए साहब, पुण्य होगा।[२] उसकी बच्ची भूख सी बिलबिला रही थी। ज्योंही डाक्टरनी ने कुछ बचा खाना पुरानी थाली में लाकर दिया तो वह थाली पर झपटने लगी। बच्ची रोटी के बडे-बडे टुकडे दांतों से काटकर निगलने लगी। उसकी आंखें बाहर निकली आ रही थी। रोटी के बडे-बडे टुकडे उसकी दशा देखकर डॉक्टरनी को उस पर तरस आ रहा था। दूसरे उसे एक नौकर की तलाश भी थी, उसे औरत ही चाहिए थी क्योंकि दोनों लडकियों को अक्सर घर पर रहना पडता था। यह औरत खुद-ब-खुद नौकरी के लिए तैयार हो गई थी। वह शरीफ मालूम होती थी, मगर मुझे धोखा भी तो हो सकता है। एक तरफ धोखे का खौफ, दूसरी तरफ उसे हमदर्दी, उसने मदद के लिए मेरी तरफ हाथ फैलाया था। मैं इसे कैसे छोड दूं। अगर मैंने इसे सहारा न दिया तो वह खुदा जाने किन लोगों के हाथ लग जाये। एक गरीब बेसहारा मुसीबतजद जवान औरत के लिए हमारे समाज कें बाइज्जत जिन्दगी गुजारने के लिए कितने रास्ते खुले हैं? इसी कशमकश में उसे नौकरी पर रख लेती है। भिखारिन उसे विश्वास दिलाती है कि

वह चोर-बदमाश नहीं है, मेहनत करके अपना और बच्ची का पेट पालना चाहती है। मगर डॉक्टरनी के पति इरफान एक अजनवी औरत को जो भिखारिन की हैसियत से आई थी नौकर रखना खतरनाक समझते हैं। 'तुम्हे क्या पता इसका तालुक्क चोरों के गिरोह से हो और वह घर का भेद मालूम करने आई हो।'[३] मगर इरफान के संदेह करने पर उसकी बेटी नरगिस बोली, जब कोई भीख मांगता है तो हम कहते हैं भीख क्यों मांगते हो, काम क्यों नही करते? और जब वह काम करना चाहता है तो हम उस पर शक करते है। जब काम नहीं मिलेगा तो बेचारी भीख मांगने के अलावा क्या करेगी।'[४]

नरगिस की बात का समर्थन करते हुए डॉक्टरनी ने कहा 'भीख मांगकर वह पेट पाल तो लेगी मगर रहने का इसे कहा ठिकाना मिलेगा, न जाने किन बदमाशें के हाथ लग जाए,वह जिन भेडियों से बचने के लिए यहां पनाह मांग रही है, मैं उसे धकेलकर उन्हीं के सामने नही डाल सकती।'[५] इस प्रकार जब उसे घर रहते कई दिन बीत गये धीरे-धीरे परिवार को उस पर विश्वास होने लगा। उसके बातचीत के तरीके के अंदाज, काम के सलीके और सफाई पसन्दी से अंदाजा होता था कि इसकी परवरिश शरीफ घराने में हुई है। मैंने उसे मां-बाप कामयाब नहीं हुई। जब भी इसके हालात मालूम करने की कोशिश करती वह चुप हो जाती। आंखे दुःख से भर जाती और अगर मैं जोर देती तो इसकी आंखों से आंसू बहने लगते। आखिरकार मैंने पुछना बंद कर दिया। जो जख्म वह दुनियां से छुपाना चाहती है उन्हें कुरेदने का मुझे क्या हक है? उसमें एक बात मैंने यह देखी कि बाहर जाने से वह बहुत घबराती थी। कभी बाजार से कोई चीज खरीदने के लिए मैं भेजती तो उसकी आंखों में वही खौफ आ जाता जैसे एक हिरणी शिकारियों से बचने के लिए पनाह चाहती हो। मगर मजबूरन उसे शिकारियों का सामना करना पड रहा हो। बाहर जाते वक्त हमेशा बच्ची को मेरे पास बैठा जाती। घर में कोई मरद आता तो हमेशा बावरचीखाने में जा बैठती। धोबी और दूध वाले के सामने जाने से घबराती थी।

जब उसे हमारे घर में रहते हुए दो महीने गुजर चुके थे तो मैंने उनसे पूछा, 'हमने तुम्हारी तनख्वाह नहीं मुकर्रर की है,तुम बताओ क्या लोगी?' 'आप लोग इतने मेहरबान हैं। मेरी ओर मेरी बच्ची की सारी जरुरतें पूरी हो जाती है। मैं तनख्वाह लेकर क्या करुंगी, मुझे कुछ खरीदने की जरुरत नही होती आप लोग सबकुछ दे देते हैं।'[६] इस पर हमने उसे कहा अगर तुम काम हमारे घर नौकरी करोगी तो तनख्वाह तो तुम्हें जरुर दी जायेगी। हम जो मुनासिब समझेंगे देंगे और जब डॉक्टरनी उसके हाथ में कुछ रुपये रखने लगी तो बोली, 'मैं यह कहां रखूंगी, आप ही अपने पास जमा कर ले जब मेरी बेटी छम्मो बडी हो जायेगी तो इसके काम आयेंगे।' इस प्रकार वह डॉक्टरनी की यकीन दिला रही थी कि उसका इस घर से जाने का कोई इरादा नही है। उसके मिजाज को घर से बाहर निकालते हुए घबराना और अजनबियों से डरना देखकर डॉक्टरनी सोचती थी न जाने उस पर खौफनाक रुप देखा है कि वह इस घर की चारदीवारी के अन्दर अपनी जिन्दगी बसर कर देने की ख्वाहिशमंद है।

दूसरी कहानी उषा वर्मा व्दारा रचित सलमा है। जो एक ऐसी औरत की कहानी है। जिसने विदेश के किस्से सुनकर अपनी आँखों में एक सपना पाला था कि वह बडे आराम से रहेगी और अपने मां-बाप की गरीबी भी दूर करेगी। अम्मी और अब्बा ने भी काफी झंझटों के बाद हाँ कह दी थी। सलमा की खाला उसे हिन्दुस्थान से लंदन लाई थी तक बडी बहन से कहा था, 'बाजी, इसे मेरे घर भेज दो, मैं इसकी शादी करा दूंगी, यह बडे आराम से रहेगी।' सलमा की अम्मी को भी बहन पर पूरा भरोसा था। जो करेगी ठीक करेगी। किसे मालूम था कि किस्मत अपना खेल खेल रही है। उसकी आंखों में सहेली का लडका बस गया था अभी इसी साल उसने डॉक्टरी पास की है। देखने में सजीला जवान, उम्र वगैरह भी सलमा के लिए बिल्कुल ठीक है। चार-पांच साल का अन्तर ज्यादा नही है। हर तरह से सलमा अनवर के लायक है। फिर पासपोर्ट बनवाते, सामान लाते, सहेलियों से मिलते महीने भर का समय कपूर की तरह उड गया। चलते समय सलमा सबसे लिपटकर बहुत रोई छोटे भाई बहिनों को कितना प्यार किया मनमे बहुत कुछ सोचकर अपने को एक अजन्में सुख में बह जाने को ठोड दिया। टैक्सी बाहर आ गई थी। खाला के साथ वह भी आकर बैठ गई और फिर बेपरवाह रुलाई का सैलाब। सलमा को लगा की कुछ बहुत जरुरी, कुछ बहुत अपना, यहीं छूटा जा रहा है। घर की तरफ से मुँह मोडकर वह दूसरी तरफ देखने लगी लेकिन इस तरह मन को मना लेना आसान नहीं होता। इतने में खाला बोली, सलमा अपना सामान देख लो। सामान सारा डिक्की में रखा जा चुका था। टैक्सी भाग रही थी और सलमा का मन अजीब सी उधेडबुन में पडा था। क्या हो रहा है सब? क्या उसका सपना सच होगा?

टॅक्सी से उतरकर सलमा खाला के साथ जहाज में बैठ गई। शुरु में तो उसे बडी घबराहट हुई लेकिन थोडी देर में सब व्यवस्थित हो गया। सलमा सीटपर निढाल सी बैठ गई और फिर एक-एक करके तमाम तस्वीरें खिसकने लगीं, छोटा भाई रोज आकर कहता बाजी मेरे लिए एक बिजली की गाडी भेजना, कभी कहता मेरे लिए एक अच्छी सी मोटर भेजना, बहुत से खिलौने, एलबम, स्वीट कितनी ख्वाहिशें लेकिन जाने वाली रात वह आकर लिफट गया, 'बाजी मुझे कुछ नहीं चाहिए, तुम कही मत जाओं।'[७] इस प्रकार वह घर कहाँ यादों में खोई हुई है। कभी अपनी सहेलियों की आवाजे उसे चुहल करती। सलमा तू तो जा रही है। मुझे भी बुला लेना। वह हडबडाकर उठती है, आंख मलते हुए देखा। खाला बोली चलो तुम्हारी नींद खुल गई अच्छा हुआ अब हम लंदन पहुँचने वाले हैं। खाला के घर उतरकर उसे लगा कि यह तो एक नई दुनिया है। न कहीं बहते नाले, न गंदा पानी, सब कुछ चमकता हुआ साफ-सुथरा, सब-कुछ इतने करीने से था कि उसे डर लगता कहीं कुछ खराब न हो जाए।

धीरे-धीरे उसके लिए सब सामान्य सा होने लगा था। एक दिन शाम को घंटी बजती है। खाला किसी से फोन पर बात कर रही थी। जाने क्यों उसे लगा कहीं कुछ गडबड है। खाला कुछ उँचा-उँचा बोलने लगी। मैंने तो तुम्हारे कहने से लडकी बुला ली, अब तुम क्यों पीछे हट रही हो? यह सुनकर मन में एक फिकर सी हो गई। सुना था खाला की सहेली कहती है कि उसका लडका बिना साथ रहे शादी नहीं करेगा, तुम मेरी मजबूरी भी तो समझो। वह साथ रहने के बाद ही तय करेगा। खाला मुझसे भी पूछती है मैं क्या जानती हूँ यहाँ के रीति-रिवाज। यह कैसा ढंग है? दो-चार दिन की परेशानी के बाद खाला ने खुद ही कह दिया कि वह तो इसकी इजाजत नहीं दे सकती। बाद में अगर अनवर ने मना कर दिया तो सलमा का क्या होगा? इस प्रकार खाला अनवर की शर्त अस्वीकार कर देती है। सलमा के मन में एक कसक सी उठती है। शायद वह देखने में यहॉ की लडकियों की तरह नहीं होगी। वह जाकर शीशे के सामने खडी हो जाती है। वह सोचती है कि साथ रहने पर मुझे देख ही तो सकते हैं। बाकि तो मैं जितना चाहूँ अपने को छिपा सकती हूँ। कौन जानेगा इसे? जो प्यार करते हैं वे तो साथ रहे या न रहे अपनी सारी आदतें भी बदल डालते है। अपना सब कुछ दे देने की तमन्ना रखते है। शायद विदेश के लोगों को यह अजीब लगे लेकिन हमारे देश में हम औरतें अपनी शख्सियत बनाती कब है? अनवर एक सरकारी डाक्टर था। सलता को भी यही अच्छा लगता था। एक बंधी-बंधाई तनख्वाह हो तो आदमी अपने रहने का एक ढंग बना लेता है। मगर किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। सलमा ही शादी हाजी साहब के बेटे जमीर से हो जाती है। हिन्दुस्तान भी खबर कर दी गई सीधे-साद ढंग से निकाह कराकर सलमा ससुराल आह गई। सलमा बीच-बीच में खाला को फोन करती रहती मैं तो बहुत खुश हूँ सब मेरा ख्याल रखते हैं। मुझे कोई कमी नहीं है। लेकिन सलमा को लगता है जमीर अधिकतर तो बाहर ही रहता है। पर जब घर में रहता है तब श्री मीलों दूर, जज्बाती तौर पर वह हमेशा अलग सा हो जाता है। जिस्म ही तो सब कुछ नहीं होता।

सलमा के दिन अच्छी तरह बीत रहे थे । उसका मन होता कि कभी वह जमीर के साथ घूमने बाहर जाये, लेकिन सास कभी उसे कहीं जाने को नहीं कहती थी। इस प्रकार घर के कामकाज में वह अपने को लगाये रखती। एक दिन घर में अधिक मेहमान आने के कारण दूध कम पड गया। वह जब दूध लाने के लिए जमीर के कोट से पैसे लेने लगी तो जेब से एक फोटो श्री उसके हाथ आ गई। फोटो देखकर उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। उसक लगा कि जैसे जीते जी उसे किसी ने बर्फ की सिल्ली पर लिटा दिया। वह क्या करे? फोटो थी ही इतने बेतुके ढंग से की कुछ भी सफाई की जरुरत नहीं थी। एक बार तो उसने खाला को फोन करने की सोची लेकिन फिर सोचा यह लडाई मुझे अकेले ही लडनी है। वह यह सोचकर कि शायद सास ही जमीर को समझायेंगी। फोटो सास के हाथों में रख देती है और स्वयं ऊपर जाकर विस्तर पर गिर पडी। सारी मजबूरी, बेकसी ही उसके हिस्से में पडी थी। सलमा को लगा कि वह हर तरफ से हार गयी। घर छूटा, मां-बाप, भाई-बहन सबको छोडकर वह एक सपना लेकर यहां आई थी। तभी सास उपर आकर बोली, 'कोई मुसीबत की बात तो नहीं है, मरद जात तो रहते ही इस तरह है।'[८] सलमा को धक्का लगा वह समझ गई कि यहां कोई उसकी बात समझने वाला नहीं है अनवर की शर्त से तो निजात मिली पर कया वह सही मायनों में आजाद हुई है? पहाड से गिरकर वह नीचे लहुलूहान होकर पडी है, सहारा कौन देगा? उसके सारे वजूद पर एक सवालिया निशान लगा है। सास ने घुमा-फिराकर यह भी कह दिया कि घर की इज्जत घर में ही में ही रहनी चाहिए। एतलब खाला या किसी से भी इसका जिक्र करना गुनाह ही होगा। सलमा के लिए घुटन बढती जा रही थी। न कोई रोशनी का एक कतरा दिखता, ना ऐसा अन्धेरा कि उसमें डूबकर सबकुछ खत्म हो जाये। सलमा को आज एहसास हुआ कि कुछ दुख ऐसे भी होते हैं जो न मरने देते हैं न जीने। वह जिस गहरी खाई में धंसती जा रही थी। वहां से निकलना कैसे होगा? उसका सिर दर्द सेफटा जा रहा थी। उसने हिम्मत करके जमीर से शिकायत की लेकिन वह उसके तेवर तेवर देखकर दंग रह गई। जमीर बोला 'मैं उसे घर में लाकर नहीं रखता यही क्या कम है। खबरदार। आज के बाद कुछ कहा। तुम्हें खाना, कपडा चाहिए और क्या। मैं जैसे भी चाहूं रहूं तुम्हें कुछ भी बोलने का हक नही।'[९] सुनते ही सलमा के सारे शरीर में आग फैल गई। उसने कांपते हुए पूछा, क्या हाजी साहब के सामने भी तुम ऐसी बात कह सकते हो? जमीर ने हंसकर कहा, 'तुम किस घमण्ड में हो उन्हे सबकुछ मालूम है।'[१०]

दुःख और क्रोध से कांपती सलमा वही बैठकर सिसकने लगी। जमीर पैर पटकता हुआ बोला, मैं उसे कलमा पढाकर दूसरा निकाह करा लूंगा। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम चुप रहो और चिखता चिल्लाता घर से बाहर चला गया। थोडी देर बाद फोन की घंटी बजी, सलमा ने बडी हिम्मत करके फोन उठाया, ऊधर खाला की आवाज आई सलमा ने खाला से बडी आरजू की, 'खाला मुझे ले चलो वरना मैं मर जाऊँगी। सलमा को लगा कि इस घर के दरवाजे बन्द हैं और वह इस घर की दीवारों को कभी भी लांघ नहीं पायेगी। य दरवाजे कभी नहीं खुलेंगे, न रोशनी का कोई कण उसके हिस्से में आयेगा। सलमा सोचती है शायद खुदकुशी ही उसे छुटकारा दिला सकती है। फिर सोचती है क्या वह अकेली रह पायेगी। वह गीग्रेन की शीशी की तरफ हाथ बढाती है मगर फिर रुक जाती है। फिर उससे भी भयानक हादसे की रात। पुलिस जमीर को ड्रग रखने के जुर्म में पकडकर ले जाती है।

एक दिन जिस दवाई से वह डर गई थी उसकी तरफ एक पक्के इरादे के साथ हाथ बढाती है और एक पानी कि गिलास के साथ सारी दवा एक ही बार में खा लेती है और कुछ देर बाद एक तरफ लुढक जाती है। दुसरे दिन जब सलमा को होश आता है तो उसने अपने को अस्पताल में पाया।

इस प्रकार ये कहानियाँ स्त्री चेतना और नारी अधिकारों से जुडी होने के साथ ही धर्म का आतंकवादी रुख, परिवार का विघटन, नारी स्वातंत्र्य की ललक, मन का टूटापन, सभ्य और असभ्य समाज का स्पष्ट चेहरा हमारे सामने रखती है तथा इनमें भोगा हुआ यथार्थ अपनी पूरी शिद्दत के साथ बोल रहा है।

संदर्भ

१. पहली कहानी, पृ.१७
२. वही, पृ. १७
३. वही, पृ. २१
४. वही, पृ. २२
५. वही, पृ. २२
६. वही, पृ. २३
७. वही, पृ. ४२
८. वही, पृ. ४६
९. वही, पृ. ४६